रोजगारोन्मुख हिंदी

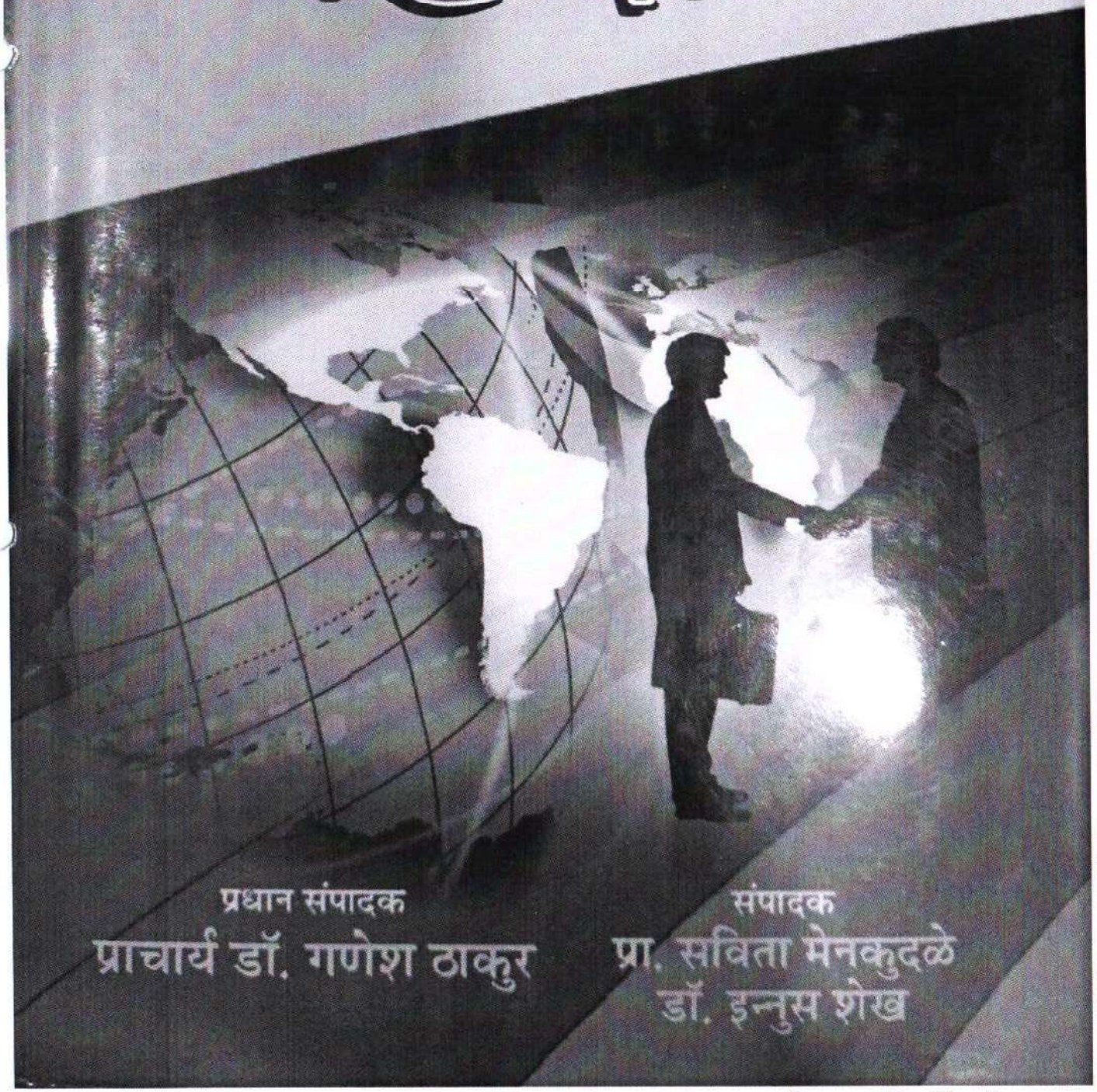

प्रधान संपादक
प्राचार्य डॉ. गणेश ठाकुर

संपादक
प्रा. सविता मेनकुदळे
डॉ. इन्नुस शेख

Scanned by CamScanner

प्रकाशक
सारंग प्रकाशन
आशापुर, सारनाथ
वाराणसी-221007 (उ० प्र०)
मो०: 09450540654, 09415447276

ISBN : 978-81-927504-9-1

© सम्पादकाधीन

प्रथम संस्करण : 2015
मूल्य : 695.00 रुपये मात्र

शब्द-संयोजन : विष्णु ग्राफिक्स

मुद्रक : पूजा प्रिण्टर्स
वसंत विहार, नौबस्ता, कानपुर

नोट– पुस्तक में प्रकाशित आलेख के लिए लेखक जिम्मेदार है, सम्पादक या प्रकाशक नहीं।

ROJGARONMUKH HINDI
Chief Editor : Principal Dr. Ganesh Thakur
Edited By : Prof. Savita Menkudle, Dr. Innus Shekh
Price : Rs. Six Hundred Ninety Five Only

Scanned by CamScanner

43. हिंदी के बलबूते पर रोजगार के अवसर 195-200
डॉ. भास्कर उमराव भवर
44. रोजगारोन्मुख हिंदी–दूरदर्शन के कार्यक्षेत्र 201-208
कु. भारती बापू सुतार
45. इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में रोजगार के अवसर 209-211
कु. भक्ती शंकर भालदारे
46. हिंदी में रोजगार के अवसर 212-215
डॉ. वेवी श्रीमंत खिलारे
47. हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर 216-218
प्रा. डॉ. बलवंत बी.एस.
48. हिंदी से रोजगार की संभावनाएँ 219-224
लेफ्ट. डॉ. बाबासाहेब माने
49. अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के अवसर 225-230
प्रा. डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले
50. मीडिया लेखन में रोजगार की संभावनाएँ 231-236
डॉ. उत्तम लक्ष्मण थोरात
51. रोजगार के परिप्रेक्ष्य में–रेडियो की बदलती दुनिया 237-242
डॉ. मैना रामदास जगताप
52. रोजगारोन्मुख हिन्दी 243-250
प्रा0 संदीप तानाजी कदम
53. संचार माध्यम और विज्ञापन 251-253
डॉ0 अंबुजा एन. माळखेडकर
54. अनुवाद और रोजगार हिन्दी 254-255
प्रा. वनिता एस. जाधव
55. जन–संप्रेषण माध्यमों में हिंदी की उपयोगिता 256-259
डॉ. गोरखनाथ किसन किर्दत
56. रोजगारोन्मुख हिंदी 260-265
डॉ0 कृष्णात आनंदराव पाटील
57. विज्ञापन : एक आकर्षक कैरियर 266-271
डॉ. अशोक बाचुळकर

Scanned by CamScanner

55

जन–संप्रेषण माध्यमों में हिंदी की उपयोगिता

प्राचीन काल से जन संप्रेषण के विविध माध्यम रहे है और मानव जाति के विकास के साथ–साथ जन संप्रेषण के माध्यमों को विकास भी तेजी हो रहा है। एक व्यक्ति जब दूसरे व्यक्ति से अपने मनोभावों को व्यक्त करना चाहता है तो अपने अभिप्रेत्य की पूर्ति करने का प्रयास करता है तो वह अपनी संप्रेक्षण शक्ति का ही प्रयोग करता है। संप्रेषण के द्वारा किसी भी भाव, विचार, संदेश, अनुभव तथा ज्ञान को व्यक्ति समूहों तक परस्पर की राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा होने साथ–साथ व्यापक जनसंपर्क की भी भाषा हैं यही कारण है कि वर्तमान समय में जन–संप्रेषण के लिए माध्यमों में हिन्दी भाषा का प्रयोग बड़े पैमाने पर होता हुआ दिखाई देता है।

जन संप्रेषण माध्यमों के प्रमुख प्रकारों में मुदित माध्यम (प्रिंट मीडिया) शब्द माध्यम (वर्ड मीडिया), इलेक्ट्रॉन माध्यम (इलेक्ट्रॉनिक माध्यम), दृश्य माध्यम (विजुअल मीडिया), तथा परंपरागत माध्यम (ट्रेडिशनल मीडिया) आदि मुख्य माध्यम हैं। आज हिंदी भाषा का प्रयोग इन सभी माध्यमों में व्यापक स्तर पर हो रहा हैं। इसी कारण जन–संप्रेषण के इन माध्यमों में हिंदी जानने–समझने वालों को रोजगार को अनेक अवसर उपलब्ध हैं।

पत्रकारिता के क्षेत्र में हिंदी की उपयोगिता–

पत्रकारिता को समाज के विचारों और साहित्य की संवाहिका के रूप में जाना जाता हैं। दैनिक समाचार पत्रों के साथ ही विभिन्न कालिक पत्रिकाओं के संपादन एवं लेखन पत्रकारिता का मुख्य कार्य है। समाचार पत्रों सप्रेषण में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक गतिविधियों, वाणिज्य–व्यापार, खेल–कूद, मनोरंजन, ज्ञान–विज्ञान, शिक्षा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य से संबंधित विषयों को साम्मिलित किया जाता है। समाज में इन सभी विषयों की जानकारी पहुँचाने की जिम्मेदारी पत्रकारों की होती है। पत्रकारिता में संपादकीय विभाग सबसे महत्वपूर्ण होता है। किसी भी समाचार पत्र की छावे इसका महत्व और लोकप्रियता उसके

Scanned by CamScanner

संपादक के कार्यों पर निर्भर करती है। संपादकीय विभाग में मुख्य संपादक, सह संपादक, समाचार संपादक, मुख्य उपसंपादक, उपसंपादक तथा विषय निहाय संपादक उदा0 साहित्य खेल, फिल्म व्यापार प्रूफ रीडर, कार्टूनिस्ट आदि विभिन्न पद होते है। इन पद पर कुशलता से कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा-खासा परिश्रमिक भी मिलता है तथा समाज में उनकी अपनी अलग पहचान भी होती है। हमारे देश में हिंदी समाचार पत्रों में हिंदुस्तान नवभारत टाइम्स, जनसत्ता, पंजब केसरी, दैनिक जागरण, अमर उजाला, राष्ट्रीय सहारा, राजस्थान पत्रिका आदि प्रमुख है। ये समाचार पत्र विभिन्न राज्यों से प्रकाशित होते हैं। अतः हिंदी पत्रकारिता में रूचि रखने वाले हिंदी अध्येताओं के लिए इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर उपरोक्त हो सकते है।

संवाददाता–

संवाददाता समाचार–जगत का महतवपूर्ण व्यक्ति होता है। समाचार एकत्रीकरण की प्रक्रिया से संवाददाता सर्वाधिक महत्वपूर्ण कड़ी हैं। सारे समाचार ब्यरो अपने संवाददाताओं के द्वार ही मुख्य रूप से समाचार प्राप्त करते हैं। समाचार पत्र के अतिरिक्त आजकल रेडियो और टेलिविजन के अनेक न्यूज चैनलों के लिए विशेष संवादताओं की नियुक्तियों की जाती है। संवाददाताओं की अनेक श्रेणियाँ होती है। इसमें वरिष्ठ संवाददाता, मुख्य संवाददाता विशेष संवाददाता, विदेश संवाददाता, आदि। भारत जैसे विकासशील देश में आधुनिक तकनीकि युग की बढ़ती हुई जटिलताओं के साथ–साथ विशेषीकृत संवाद लेखन का महत्व बढ़ता जा रहा हैं। संवाददाता को समाचार प्राप्त करने की योग्यता अनेक बातों पर निर्भर करती है, जिज्ञासा, सतर्कता, दूरदृष्टि, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, निर्भयता, स्पष्टवादिता तथा समनिष्ठता आदि योग्यतावादी व्यक्ति नवयुवक सफल संवाददाता बन सकते हैं। हिंदी के साथ–साथ अंग्रेजी और प्रादेशिक भाषाओं की जानकारी रखने वाले संवाददाता किसी भी क्षेत्र में अपने आप को स्थापित कर सकते है।

संपादक–

पत्र–पत्रिकाओं में संपादक का स्थान सर्वश्रेष्ठ और अत्यंत उत्तरदायित्व पूर्ण होता है। पत्रकारिता के क्षेत्र में समाचार–संपादन एक उच्च कोटि का व्यवसाय बन गया है। संपादक के कार्य पर ही किसी समाचार पत्र की अलग पहचान निर्माण होती है। "एन. सी. पंत के अनुसार– 'पत्र–पत्रिकाओं की नीति का निर्धारण करने वाला संपादकही होता है। संपादक पत्रकारिता की अनुशासनिक न्यायिक और व्यवस्थापकीय धारोओं का संगम है।'"[1] स्पष्ट है कि संपादक ही समाचार पत्र की उददेश्य नीति, समाचारों का व्यापक प्रसार आदि बाते निर्धारित करता है।

फीचर लेखन–

समाचार–पत्रों तथा पत्रिकाओं के लिए विशेष रूप से उपयोगी होती है।

Scanned by CamScanner

"फीचर में किसी घटना व्यक्ति वस्तु या स्थान के बारे में लिखा जाने वाला विशिष्ट आलेख है जो कल्पनाशीलता और सृजनात्मक कौशल के साथ मनोरंजक और आकर्षक शैली में सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है।"[2] (पृ0 121) फीचर लेखन का कार्य अत्याधिक कलात्मक होता है, जिसके लिए, अनुभूतियों, अवलोकन तथा कल्पना की आवश्यकता होती है। फीचर अनेक विषयों पर लिखे जाते हैं, जैसे– व्यक्ति संबंधी फीचर, त्यौहार संबंधी फीचर राजनीतिक विचार, ऐतिहासिक फीचर, चित्रात्मक फीचर, वैज्ञानिक फीचर आदि। अतः अच्छे फीचर लेखन की क्षमता रखने वाले हिंदी लेखकों के लिए पत्रकारिता के क्षेत्र में सुअवसर मिल सकता है।

रेडियो पत्रकारिता–

रेडियों आवाज की दुनिया का जादूगार है। इसका प्रमुख माध्यम आवाज और कान होते है। जन संप्रेषण माध्यमों में रेडियों सामूहिक और सार्वलौकिक माध्यम है। रेडियों द्वारा समाचार बुलेटिन, महत्वपूर्ण विषयों पर वर्ताऐं और परिचर्चाएँ पुस्तक समीक्षाएँ, गीत–संगीत रेडियों नाटक, खेल, कृषि, शिक्षा, मौसम आदि विभिन्न विषयों की जानकारी प्रस्तुतीकरण आदि रेडियों पत्रकारिता के विभिन्न अंग माने जाते हैं। रेडियों की भाषा जन सामान्य की भाषा होती है, क्योंकि इसका श्रोता वर्ग शिक्षित–अशिक्षित, होना स्तर का होता हैं रेडियों की भाषा सुस्पष्ट सुरल, सुबोध, सुगम एवं आकर्षक शैली युक्त होनी चाहिए। "रेडियों समाचार से बड़े–बड़े और संविष्ट वाक्यों, अप्रचलित शब्दों और आलंकारिक भाषा के प्रयोग से बचा जाता है। किन्तु विस्तार के बचने के बावजूद समाचार के सारे विवरण शामिल करने भी आवश्यक होते है।"[3] रेडियो पत्रकारिता में प्रादेशिक संस्कृति, भाषाओं की विभिन्नता स्थानगत अंतर और श्रोताओं की अभिरूचियाँ आदि सभी बातों का ध्यान रखना जरूरी होता है।

वर्तमान युग सूचना–क्रांति का युग है ऐसे में दिन–ब–दिन बढ़ते हुए रेडियों केंद्रों में बहुभाषिक रेडियों पत्रकारों की माँग बढ़ रही है।

टेलीविजन पत्रकारिता–

आधुनिक युग में टेलिवीजन जन–संसार का सबसे बड़ा माध्यम हैं। टेलीविजन के अविष्कार से किसी घटनाक्रम को ना सिर्फ आवाज के माध्यम से सुन सकते हैं बल्कि देख भी सकते हैं। देश–विदेश के किसी भी कोने में बैठे–बैठे हम एक साथ कहीं भी चैनलों से देश–विदेश के ताजा समाचार देख और सुन सकते हैं। दूरदर्शन पत्रकारिता में आलेख, संकेत पट्टिका, ग्राफ लिखने और तैयार करने वालों की आवश्यकता होती हैं। दूरदर्शन में कार्यरत पत्रकार को लेखन, शब्द, व्यक्तित्व के साथ वीडियो तकनीकि, ध्वनि तकनीक एवं फिल्म तकनीकि में निपुण होना आवश्यक है। आज दूरदर्शन हमारी दैनंदिन जीवन प्रणाली का अभिन्न अंग बन चुका है। समाचारों के साथ ही मनोरंजन, धारावाहिक

Scanned by CamScanner

फीचर फिल्म, नाटक नृत्य संगीत, खेलकूद, समसामायिक विषयों पर आधारित वृत्तचित्र, सामाजिक तथा राजनीतिक गतिविधियों से प्रेरित कार्यक्रम आदि को यथासंभव सफल एवं सुलभ बनाने हेतु अच्छे दूरदर्शन पत्रकारों की आवश्यकता होती है। इस क्षेत्र में भी हिंदी भाषा की जानकारी रखने वाले अध्येताओं को रोजी–रोटी कमाने का सुअवसर प्राप्त हो सकता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिंदी के क्षेत्र में उपयोगी भाषिक क्षमता रखने वाले हिन्दी अध्येताओं को जन संप्रेषण के क्षेत्र में रोजगार के अंनत अवसर उपलब्ध हो सकते हैं। किन्तु आवश्यकता है हमें अपने आप को उन क्षेत्रों में स्थापित करने की।

संदर्भ सूची

1. पत्रकारिता एंव संपादन कला–एन. सी. पत, पृ. 102 राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली
2. वही, पृ. 121
3. डॉ0 विजय कुलश्रेष्ठ, समाचार–पत्र एवं समाचार संप्रेषण नमन प्रकाशन, नई दिल्ली प्र0 सं0 2006 पृ0 113

डॉ. गोरखनाथ किसन किर्दत
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, इस्लामपुर

Scanned by CamScanner